नवरत्न ग्रन्थमाला प्रथम पुष्प

गुदगुदी

रचयिता—
श्री चन्द्रनाथ मिश्र "अमर"
एम० एल० एकेडमी
लहेरियासराय

नवरत्न गोष्ठी
दरभंगा

नवरत्न ग्रन्थमाला प्रथम पुष्प

गुदगुदी

युगचक्र, त्रिफला, वीर कन्या, समाधान,

मुहावरा ओ लोकोक्ति आदिक

रचयिता —

श्री चन्द्रनाथ मिश्र "अमर"

एम्० एल्० एकेडमी

लहेरियासराय

नवरत्न गोष्ठी

दरभंगा

नवरत्न गोष्ठी
दरभंगा
(मिथिला)

"संशोधित तथा परिवर्द्धित संस्करण"

III०)

मुद्रक
श्री कामेश्वर झा
मैनेजर
दरभंगा जिला बोर्ड प्रेस

अपना दिस सँ

आइ सँ दस बरख पहिने 'गुदगुदी' हमरा मैथिली साहित्य-संसारक सोझाँ एक सेवकक रूप मे उपस्थित कैलक। ओही समयक लग पास सँ हम मैथिलीक अध्यापन केँ जीविका बनाय थोड़ बहुत मैथिली भाषाक अनुशीलन करबा दिस प्रवृत्त रहलहुँ अछि। हमर जे अल्प अनुभव ओ अल्प सेवा अछि ताहि सँ कते गुन बेसी अनुराग अपना प्रति मैथिलीक पाठक लोकनि सँ हम प्राप्त कैलहुँ अछि। ई लिखबाक साहस हम एहि हेतु कै रहल छी जे मैथिलीक पोथीक दोसर संस्करण हो जकरा पाठ्य सूची सँ कोनो सरोकार नहि, ई थोड़ आश्चर्यक बात नहि थीक।

ई हमर प्राथमिक रचना सब थीक, जे हमरा बड़ प्रिय अछि, ने जानि से किएक? एहि नवीन संस्करण मे किछु अतुकान्त रचनाक सन्निवेश ओ किछु संग्रहीत कविताक वहिष्कार सेहो भेल अछि किन्तु स्थानाभावेँ। प्रथम संस्करण मे एकर भूमिका लिखने छलाह हमर अन्तरङ्ग मित्र श्री मथुरा नन्द चौधरी 'माथुर'। स्थानाभावे ओ एहि मे नहि अछि। श्री महेश शर्मा जी जे हमर बन्धुवर्ग मे एक अन्यतम छथि से अपन विचार लिखि ओ बन्धुवर श्री कामेश्वर बाबू एकरा मुद्रित कै अनुगृहीत कैल अछि तदर्थ कृतज्ञता ज्ञापन करैत छी!

—लेखक

सूची

प्रस्तुत काव्य-पुस्तक आ कविक सम्बन्ध मे :—

युगधर्मक चेतनानुसारेँ सामयिक साहित्यकार अपन प्रबुद्ध मनोवेग केँ अभिव्यक्त करैत छथि। जीवनक यथार्थ सत्य हृदयग्राहिताक रूप धारणा कै समष्टिगत जीवनक अभ्युदयार्थ काव्यात्मक रूपमे व्यक्त होइछ। काव्य-प्रतिपादित सत्यक यथार्थता एतबेमे छैक जे ओ जन-मानसक कालुष्य केँ विदूरित कै परिशुद्ध भावनाक संचार करै।

कवि प्रतिभा-निष्णात दृष्टिकोण सँ जीवनक यावतीय वस्तुस्थितिक अवलोकन करैत छथि, तावतीय शुष्क बिम्ब स्वोपार्जित ज्ञान-गौरव-गरिमा सँ उद्भासित कै समाजक सर्वोच्च संस्कृतिक पोषणक हेतु व्यक्त करैत छथि। युग-संविधानक व्यवाहारिक रूप यावत पर्यन्त संस्कारिता सँ अनुप्राणित नहि होइछ, तावत् धरि जनता-जनार्दनक आभ्यन्तरिक रूप एकत्वक परिधिमे नहि आबि सकैछ।

कलाकार कलाक जे कोने रूप प्राञ्जलताक सम्यक् सम्बोधि दै सुखदरूप निखारबाक हेतु व्यक्त करैत छथि, ओहिमे जे कोनो तथ्यांश भासित हो, ओकरा केवल कल्पनोपार्जित वस्तु विधान नहि मानि, जीवनक वास्तविकताक ज्ञानक आधारशिला मानि व्यावहारिक रूप देबाक चेष्टा करब आवश्यक। मनो-

रंजनक माध्यम सँ अनुभूतिक किरणजाल पसारि जन-हृदयक अंधकार जे कयो दूर करबाक प्रयत्न करैत छथि, वैह कलाकार स्थायिताक पावन कोटिमे आबि जन-जीवनक अतिशय सामीप्य राखि सकैत छथि।

साहित्य-निर्माण द्वारा अनेको कवि, लेखक, अपन प्रतिभागत वैदुष्यक चमत्कार देखैबाक हेतु सन्नद्ध रहैत छथि, मुदा जाहि काव्य सँ रागात्मिका वृत्तिक जागरण नहि, रचना-कौशल सँ जीवनक गूढ़तम रहस्यक तात्त्विक अनुभूति नहि, ओकर बहुदूरव्यापी महत्त्वांकनक कथे कोन ? अस्तु!

एहि कविक एक विशिष्ट प्रतिभाक व्यापक रूप 'गुदगुदी' मे देखल, जे हमरा लोकनिक तन्द्रिल तार कें झंकृत करबाक प्रयत्न करैत बजलाह :—

'विजये ! विजय शंख हम फूकी !

युगचक्रक प्रणेता युगक दुर्बलता तथा परिवर्त्तनशीलताक वर्णनक संग-संग हृदयक कपकपी कें दूर करबाक सेहो चेष्टा कैलन्हि अछि। कविक स्वाभाविक उक्ति वैचित्र्य सँ परिपूर्ण जीवनक रूपतँ देखू :—

'ककरो उपवन छइ मजरि रहल अनके रक्तें सब दिन सीचल !
ककरो अन्तर छइ पजरि रहल भूखल शिशु दिस मन छइ खीचल !'

त्रिफल दायिनी त्रिफला सामाजिक विषम वातावरणक जागरूक रूप उपस्थित कै यैह कहवाक हेतु उद्यत अछि जे— श्रम-सलिल-सिंचित सुधा-फल-प्राप्ति हेतु जे कोनो व्यक्ति तत्पर रहैत छथि हुनक जीवन केहनो विपन्न काल मे सापद नहि भै सकैत छैन्हि :—

'सदै पनही बाबू भैयाक हमर भागेँ धरि रहौ टुटैत
जाहि सँ भरि परिवारक हेतु रहौ ढौआ धरि खूब जुटैत !'

बुच्चू बाबू आ बुचबा चमार युगक प्रश्नोत्तर जकाँ उपस्थित छथि। बुचबा चमारक हृदय मे कर्मनिष्ठताक विशाल गंगाजल आ ओहि मे स्नान कै निमग्न, मुदा बुच्चू बाबूक हाल !

वीर कन्या नामक आदर्शानुप्राणित सामाजिक उपन्यास अपूर्व विशिष्टताक वारिदमालाक अढ़ मे कर्त्तव्य-सौदामिनीक उद्भावना करैत विलक्षण शैली, उदार दृष्टिकोण, परिपक्व अनुभूति एवं भाषाक प्राञ्जल कलेवर धारण कैने भागीरथीक वैशद्य प्रकाशित करैत कहैछ :—

'कहू भद्र ! अहाँक ई विषम स्थिति हमरो ओहिना विषम बना देलक अछि, जेना ज्वराक्रान्त मनुष्यक काँखतर पड़ला उत्तर थर्मामीटरक पारा चढ़ि ओकरा विषम बना दैछ……'

मैथिली-साहित्यक आधुनिक काल गद्य, पद्य, नाटक, आख्यायिका, आलोचना, लोक-गीत आदि विशिष्ट साहित्यिक

विचारधारा सँ दिनानुदिन अभ्युन्नतिशील होइत जाइत अछि। राजनीतिक एहि संक्रमण काल मे देश व्यवस्थाक एहि स्वर्णिम अवसर मे व्यक्ति व्यक्ति केँ युगचक्रक ई पाँती स्मरण राखब आवश्यक :—

पद-लोलुप सबलोक भेल अछि निस्सन जे छल फोंक भेल अछि
त्यागक मंत्र सिखावै अनका आ अपने घुसकान दैत अछि !'

'पनिभरक डाबा' मे कविक दार्शनिक भाव कोन रूप मे व्यक्त छैन्हि तकर एक आभास त देखू—डाबा-स्वयं बजैछः-

दिन-दिन दो गुन दुख बढ़ल गेल कर्मक रेखा नहि पढ़ल गेल...
क्षण भंगुर जग, जीवन दूनू, एतबा धरि अनुभव अछि हमरो...
परहित साधन मे जौड़ आइ बनले अछि कंठाभरण हमर...'

जीवनक प्रतिष्ठा, क्षणभंगुर शरीर पावि, अविनश्वर श्रमक शिला पर समासीन भै कर्त्तव्यक इतिहास रचब, अनुशासनक रज्जु सँ सीमाबद्ध भै यैह थीक मानव-जीवनक परमोच्च आदर्श !

प्रस्तुत काव्य-प्रणेताक परिचयपातक हेतु विशेष कहब आवश्यक नहि बूझि, आब एतवे टा कहब जे हिनक पद्य, गद्य आलोचना, कथा, अभिव्यंजना मूलक उक्ति वैचित्र्य साहित्य-जगतक मापदण्ड मानल जा सकैछ।

अग्रहण पूर्ण–१३६४ साल **—"श्रीमहेश"**

विजये !—१

विजये ! विजय शंख हम फूकी ॥

रगड़ि रगड़ि तरहत्थी पर दै-
फाँकि मस्त भै झूकी ।
पकड़ि पकड़ि पाथर केर टुकरी
चुटकी पर दै बूकी ॥

विजये ! विजय शंख हम फूकी ॥

पञ्चम तान ज्ञान बिनु रहितहुँ
मस्त फागु नित कूकी ।
रसगुल्ला लड्डू खैबा मे
ककरो लग नहि चूकी ।
विजये । विजय शंख हम फूकी ॥

Scanned by CamScanner

३

बड़का घूड़क ओ भुंभुर आगि ,
घोंसिआय दैत छल हृदय दागि ।
भरि राति चटावै शीत जागि,
सब बाप पुतें परिवार लागि ॥
खीचइ छल कोमल चाम हमर ।
पति राखन अल्हुआ नाम हमर ॥

४

बाबू ! आत्मा सँ परम शुद्ध,
हम थिकहुँ महात्मा सिद्ध-बुद्ध ।
चिकरैत भेल जौं कण्ठ रुद्ध,
हम जगत पसारल महा युद्ध ॥
सुनलन्हि ई सीताराम हमर ।
पति राखन अल्हुआ नाम हमर ॥

५

घर घर मे सबहिक धान सठल,
बड़ बड़ कुटुम्ब लग मान घटल ।
"प्रेमी कृषकक सरकार अटल,"
ई सुयश हमर संसार पटल ॥
दीनक घर छल विश्रामक घर ।
पति राखन अल्हुआ नाम हमर ॥

६

'बाबू भैया' अपनाय लेल,
मिसरी दूधक सहयोग देल।
सौभाग्यक तेँ अछि उदय भेल,
मनमस्त हमर बस झूमि गेल॥
बड़का घर हमर दलानक घर।
पति राखन अल्हुआ नाम हमर॥

७

के बजता सम्मुख हमर आबि?
अलगट्टे तनिका देबनि दाबि।
संसार सुयश अछि रहल गाबि,
हम गेलहुँ अपन साम्राज्य पाबि॥
के कै सकता अपमान हमर?
पति राखन अल्हुआ नाम हमर॥

८

माखन मिसरी केँ देलन्हि छोड़ि,
स्नेहक बन्धन केँ लेलन्हि तोड़ि।
हमरा सँ पुरना प्रेम जोड़ि,
रहलाह ताकि सब खेत कोड़ि॥
मन्दिरक थिका घनश्याम हमर।
नहिं रहथि विधाता वाम हमर।
पति राखन अल्हुआ नाम हमर॥

बुढ़बाक कक्का—४

१

बस लहरि एक,
बस पहर एक,
बसि गेल वृद्ध केर सूटकेश मे
छोट छीन बस शहर एक ॥

मन मे उमंग,
मन मे तरंग,
मन पर अन-मन मनहर सन मन
किछु चढ़ा देल नूतने रंग ॥

अन्तर आकुल,
बाहर आकुल,
आकुलि रोमावलि, स्वेदक कण-
बन बन मुख पर, भ्रू पर आकुल ॥

४

अन्तर हुलास,
अन्तर प्रकाश,
अन्तर मे गोड़ल एक आश
अवशिष्ट शुद्ध बस एक मास ॥

५

नव युगक युवक,
नव युवक युवक,
बस वृद्ध अदन्तक आगाँ मे
रहला सब दिन बुढ़िबके युवक ॥

६

करता विआह,
मुँह जावि, वाह !
जे नहिं कहता, से व्यर्थ व्यर्थ
सब दिन हैबे करता तबाह ॥

७

दस बीस टका,
बुढ़बोक कका,
किछु पैंच खोंइच कै लै आनल
जनिका टुटैत छल मँड़सटका ॥

८

आयल से दिन,
लायल से दिन,
सौभाग्यक रथ पर स्वर्ण ध्वजा
जा पुनि पुनि फहरायल से दिन ॥

९

दू दिन विशेष,
रहि गेल शेष,
"सारदा एक्ट" केर नाम सूनि
वृद्धक फाटै लागत कुहेस ॥

१०

किछु रहि रहि कै,
किछु सहि सहि कै.
निज हित अपेक्षितक आगाँ मे
लागै बुकौर किछु कहि कहि कै ॥

११

"परिवार हमर,
संसार हमर,
सब उजड़ि गेल जौं सत्य थीक
"सारदा एक्ट" कप्पार हमर ॥"

१२

मरि गेलहुँ हाय !
जरि गेलहुँ हाय !
लाजक खत्ता मे लै विआह केर
नाँव व्यर्थ गड़ि गेलहुँ हाय !!

१३

जे छल टोलक,
अपना गोलक,
जकरा रहैत छल काज सतत
अनकर भितरी भिट्ठी फोलक ।।

१४

सब आबि गेल,
बस, पाबि गेल,
ढ़ा कें अपनैतीक कथा सँ
चारू दिस सँ दाबि देल ।।

१५

औ पून कका !
कहलक बड़का,
छल धूर्त, धरू भरना जमीन
लै चलू हजारे संग टका ।।

१६

होयत सब टा,
ई सब हम टा-
कै देब बीच सौराठे मे-
के मर्द एहन ? बाजत नङ्टा ।।

१७

की सुनइ छिअइ ?
की जनइ छिअइ ?
हमरो सब तँऽ दिन राति कका-
एकबारे टा केँ धुनइ छिअइ ॥

१८

जौं हेतइ खबरि-
तँऽ जेबइ ससरि,
हाकिमक हाथ दस बीस टका-
दै, ओकरहि लग मे जेबइ नमरि ॥

१९

तेँ की विवाह-
नहिं हैत ? वाह !
से की कहैत छी ? आगि देखौने
कत्तहु नहिं नमरैक लाह !!

२०

अपना गट्टिक,
अपना पट्टिक
सब चलल धोआ धोती कुर्त्ता
बृद्धक फूजल कर पनवट्टिक ॥

२१

जाजिम मसनद,
सब छल गदमद,
ललका धोती पर मैल पाग
दै चलला वृद्ध बनल लदफद ॥

२२

हम सब जा' छी
"तावत गाछी,"-
कहि कहि हकमथि, चञ्चलता छल
बस नाक परक जहिना माछी ॥

२३

छौंड़ा दशटा
जे छल नञ्टा
रस्ते सँऽ हुनका कच कचाय
अन्तिम मे फाड़ि देलक दोपटा ॥

२४

बस बिगड़लाह
बस तड़पलाह
थर थर कपैत क्रोधेँ बूढ़ा
मधुबनी सड़क पर पहुँचलाह ॥

२५

जा कै बजार
सङ लै भजार
नबका दोपटा किनबाक हेतु
फोलल मोटरी बान्हल हजार ॥

२६

कीनल रुमाल
चमकैत लाल
दै जेबी मे ओटोक कार्ड
मिर्जइ गम गम, बूढ़ा कमाल ॥

२६

पुनि कैल ध्यान,
पागो पुरान,
लै कोकटीक सीटल नवीन
कै कल्ला तर खिल्ली चलान ॥

२८

एक्का पर चढ़ि,
बाजथि गढ़ि गढ़ि,
चललाह सभा सौराठक दिश
"ओं गणानान्त्वा गणपति" पढ़ि ॥

२९

बूढ़ा पाठक-
पुरना ठाठक,
भलमानुस गट्टी सब चिन्हैत-
छलथिन्ह बासिन्दा सौराठक ।।

३०

सब घटक राज
बुढ़बा समाज
बेङन ठाकुर, फेकन चौधरि,
घुटरू झा जनिकर आर्त्तकाज ।।

३१

सब पहुँचलाह
बैसइ गेलाह
बेङन ठाकुर केर लक्षण बस
हमरा गामक डोमा मलाह ।।

३२

नासिकानन्द
जे छलइ बन्द-
नोसिआनो मे, चुटकी भरि भरि
पूड़ा में दै दै, भै बुलन्द ।।

३३

किछु कै निश्चय
पूछल परिचय
गाछीक रंग किछु गरम देखि
बूढ़ा लगला मद मे फूलय ॥

३४

किछु छला व्यस्त
घुटरू, प्रशस्त
पाँजिक बड़का व्यापक छलाह
सम्पत्तिक धरि कनिञो सिकस्त ॥

३५

घुमनाइ व्यर्थ
होइतनि अनर्थ
जौं कतहु कदाचित नहि पटितनि
कन्या छलथिन्ह बढ़िञा समर्थ ॥

३६

पढ़ुआ बाबा
"ननु नच किंवा-"
मे लागल छला, छलनि हुनको
पञ्जी बद्धक बड़का दाबा ॥

३७

मुठभेंड़ भेल
सब कड़कि गेल
घुटरू जौं करता एहन काज
तँऽ पड़त समाजो मे झमेल ॥

३८

पठिहारक जड़ि
जौं हेतइ खबरि,
भलमानुस सब कुचड़त मिलमिलि
की मूड़ी गाड़ब हम सबतरि ? ॥

३९

व्यापक धरि घर
सब दिन हिनकर,
रोँटी, मड़रौनी, पिलखवाड़,
कुटमैती सब हिनकर सुन्दर ॥

४०

चारिम विवाह
कैने छलाह
टाका बारह सै, ताहू पर
व्यवहार, भार मे भै बताह

४१

दू सै गनलनि
अपनहिं कहलनि
भलमानुस सँऽ सम्बन्ध भेलनि
तैं फज्झति गारि सेहो सहलनि ॥

४२

छथि अठकपारि
की हड़ संघारि
जे कहिअनि, सब छथि, वर्षहि-
दिनमे हुनको देलथिन्ह फेर मारि ॥

× × × ×

४३

बुधियार परम
फेकन, अनुपम
सोचल बिचार पढुआ बाबा केँ
बात करौलक ई हृद्गम ॥

४४

किछु घूस घास
चालिस पचास
जौं भेटि जाय तँ क्षतिए की ?
हमरा सब केँ तँ यैह आश ॥

Scanned by CamScanner

४५

अपने करबइ
नौ सै धरबइ
पहिने, आखिर मे सातो सै धरि
हैत काज अपने पड़बइ ॥

४६

टाकाक गन्ध-
ओ पाबि, अन्ध
भै गेला, बेचारे घुटरू कें
बजवाय कहलथिन्ह ई समन्ध -

४७

कै लैह अवश
नहि हेतह अयश
सुख दुखतँ अपना कैने की
होइत छइ? जे छइ विधिना वश॥

४८

ओ दिन बीतल
फेकन जीतल
बेङन नाङड़ि कें सुट पुटाय
"घूमथि बिलाड़ि जहिना तीतल" ॥

४९

बस भेल प्रात
उनटल बसात
लहलनि फेकन चौधरिक हाथ
जारी कैलनि पुनि अवरजात ॥

५०

पहुँचल घुमैत ०
देखल अबैत ०
बूढ़ा पाठक अगराय गेला
कर्मो छलैनि छुतहड़ अपैत ॥

५१

बस चारि सयक
फिरहिस्त ब्ययक
फेकन चौधरि केर आगाँ मे
दै देल बासठिम वर्ष वयक ॥

५२

फेकन सुनि कै
मन मे गुनि कै
पढुआ बाबाक बिचार सुना देलथिन
रहि कै, किछु गुनि धुनि कै ॥

५३

मुँह भेल ताम
नौ सैक नाम
सुनि मुँह बनौलनि पाठकजी
"अनमन जहिना कनहा लताम" ।।

५४

छल ताबत तक
फेकन टक टक—
तकिते बूढ़ाक मुखाकृति पुनि
बजला बूढ़ा—बुड़िलोल घटक—

५५

नौ सै लेताह
हम छी बताह
आ" की ऐलहुँ अछि गाछी मे
करबा लै हम पहिले बिआह ।।

५६

फेकन बिगड़ल
क्रोधें तड़पल
किछु बातचीत मे छत्ता पर छत्ता-
कड़कल हल्ला बजरल ।।

५७

ऊठल हल्ला,
पसरल हल्ला,
गाछी हलचल, पँजिआड़ व्यस्त,
बनिआ कनैत लुटलक गल्ला ॥

५८

छल चाभि एक
ओकरा कनेक
भै गेलइ भान मधुबनिओ मे
छल बूढ़ा लग टाका जतेक ॥

५९

ता, साँझ भेल
पसरल झमेल
हुल्लड़बाजी मे बूढ़ा के ओ चाभि
आबि देलक धकेल ॥

६०

खसिते चितंग
मन भेल तंग
भै गेल मनोरथ सब विलीन
क्षण भरि मे रंगक संग संग ॥

६१

घैने पछोड़
कैलक नछोड़
वृद्धक बटुआ कै देलक पार
बूड़ा के सुझितो छलनि थोड़ ॥

६२

पुनि भेल शान्त
गाछीक प्रान्त
ढट्ठा बटुआ सँ शून्य देखि
बूढ़ाक हृदय भेलन्हि अशान्त ॥

६३

एमहर तकलनि
ओमहर तकलनि
गाछी के कण कण तकलन्हि
जेबी तकलन्हि, पेटी तकलन्हि ॥

६४

सब छल अबाक
सब छल फराक
अन्तिम मे बूढ़ा बाप बाप कहि
मारल कसि कै डबल हाक ॥

६५

लुलुआयल सन
बिधुआयल सन
मुखड़ा छल काँचे बाँसक ओ
"चोटकलहा पोर सुखायल सन" ॥

६६

छल मनक भाव
हर्षक अभाव
से हम की लिखब, बुझब पाठक !
अपने अपने बुद्धिक प्रभाव ॥

६७

खन सिट्ठी, खन—
दालिपिट्ठी सन,
मूँहक मुद्रा बदलैत रहल
काँचे तेतरिक खटमिट्ठी सन ॥

——०——

मन्त्री — ५

१

हम मन्त्री छी,
हम एक पैघ षड़यन्त्री छी।
मानवक सुधारक हेतु हमहिं-
संस्था सबहिक हृत्तन्त्री छी ॥

१

हम त्यागी छी,
त्यागी रहितहुँ पुनि रागी छी।
आगाँ पाछाँ बहुतो घूमथि
तैं हेतु बनल "बड़भागी" छी ॥

३

फल टटका दी,
बड़का बड़का कें अँटका दी।
चन्दा सँ जेबी भरि, संस्था कें-
फाँसी पर हम लटका दी ॥

४

हम सभ्ये सन,

सभ्यहु मे बड़का सन अन-मन ।
भण्डा नहि फूटै ताहि हेतु
झट झट दै कै ली अधिवेशन ॥

५

हम रस आदक,

नित वृद्धि करी सबहक स्वादक ।
मकरध्वज सदृश रसायन छथि
हमरे सँ मिलि मिलि सम्पादक ॥

६

अछि सभक ज्ञान,

जनिकर अछि सुन्दर खान दान ।
तनिका बनाय "मेम्बर "नम्बर"-
पर आनि करी हम प्राण दान ॥

७

जे बुझथि बात,

तनिका सँ रहि हम कात कात ।
पाछाँ पाछाँ घुमबैत रही
चौदह सन्ध्या, पन्द्रह परात ॥

८

हम सिद्धहस्त,
छी विश्व भरिक सब सँ प्रशस्त।
हम जमा खर्च केँ साफ राखि
बड़को केँ कै दी अस्त व्यस्त

९

हम छी श्रीफल,
ऊपर सँ चिक्कन बेस सफल।
अन्तर लस्सा सँ ओत प्रोत
कण्ठे लग अछि आँठी अँटकल॥

—:०:—

सम्पादक— ६

१

हम सम्पादक हम सम्पादक ।
चुट्टा सँ पकड़ि पकड़ि लाबी
हम यत्र तत्र जे किछु पाबी ।
फल्लाँक उदय फल्लाँक मरण
नित ढेर लगाबी संवादक ॥
हम सम्पादक ॥

२

आबथि कवि वा क्यौ कलाकार
हम बन्द करी सबहक बकार ।
एमहर ओमहर नहि घुसुकि सकथि
आचार्य स्वयं छी बकबादक ॥
हम सम्पादक ॥

३

साहित्य पढ़ल किछु कमे बेस
व्याकरणक तँऽ अछि मात्र लेश ।
आबथि तथापि पहिने हमरे
लग ग्रन्थकार ओ अनुवादक ॥
हम सम्पादक ॥

४

हम वाताबरण बूझि प्रान्तक
आश्वासक बनी सदा श्रान्तक ।
पुड़िए भरि मे बड़को माँतथि
हम छी पदार्थ तेहने मादक ॥
हम सम्पादक ॥

५

अछि हमर मनोरम आत्मकथा,
हम "ननु नच किंवा यथातथा"
जे किछु लिखैत छी थीक बुझू,
सब फल सरकारी परसादक ॥
हम सम्पादक ॥

——:०:——

ओकील—७

१

ओकील हाय ! मोकील बिना
कोकिलक संग छी कूकि रहल ।
चातक बनि स्वाती बुन्द टका पर
ध्यान गाड़ि, छी झूकि रहल ॥

२

पण्डित बनि साधै धर्म जगत
हम छी विरुद्ध कें साधि रहल ।
हम अपन समाजक गर्दनि चढ़ि
शासनक बीच छी व्याधि बनल ॥

३

हम मूस जकाँ घर फोड़ि, अपन-
स्वार्थक संसार बसा लइ छी ।
हम बड़की अन्हरी बाभहुँ कें
चाङुर मे आनि फँसा लइ जी ॥

४

अपना पचक हेतुएँ अपन
गर्दनि धरि रखने आँट रही।
अपनो मन मे अनुभव होइछ
जहिना समाज मे काँट रही॥

५

जीवन तथापि अछि भार बनल
अगवे माछी छी मारि रहल।
तइओ ई धन्य समाजे अछि
जे कहुना समय ससारि रहल॥

——:०:——

प्रोफेसर—८

हम प्रोफेसर छी प्रोफेसर।
सम्बोधन हमरा लै अछि "सर" ॥
'लड़का' सँ लै बड़का कें हम,
कड़का दी तँ साधथि सब दम।
छथि भावी युगक युवकगण सब
से, दू से हमरे पर निर्भर॥
हम प्रोफेसर॥

२

'बी० ए०' धरि कैलहुँ पास जखन
बीत्रो उपाड़ि नहि भेल तखन।
'एम० ए०' धरि पढ़ने अइ मे छी-,
अछि जीवन आब हमर सुन्दर॥
हम प्रोफेसर॥

३

हम सभा बीच झाड़ी लेक्चर,
जनता कें कहिअइ खूब कचर।
तकनहुँ दुनिआ मे नहिं भेटत,
हमरा सब सँ बेसी चरफर॥
हम प्रोफेसर॥

४

कसिकै मेहनति दू मास करी,
तँ मूर्खताक जड़ि नाश करी।
कलिकलि, वा हौहटि कें जहिना
जड़ि सँ निर्मूल करै "सलफर"॥
हम प्रोफेसर॥

५

धरती सँ ऊपर सात हाथ-
पर रहै राति दिन हमर माथ
नहि पढ़ी, मुदा फाँकी धरि दी
तइओ न करथि क्यौ ससर फसर॥

———

अध्यापक ६

१

हम अध्यापक छी अध्यापक ।
हम मटोमाट, हम बड़ व्यापक ।।
हम "अइउण ऋलृक" रटल जखन,
कप्पार दरिद्रा सटल तखन ।
दश वर्ष परिश्रम कैला पर-
दश टका भेटै, ई फल पापक ।।
हम अध्यापक ।।

२

"एकः शब्दः सम्य ज्ञातः"
पढ़िकै सन्तोष करी मातः ।
एही सँ निश्चय हैत न शा-,
दैहिक, दैविक, भौतिक तापक ।।
हम अध्यापक ।।

३

फल में फल चानन ठोप करी,
अव्यय में सुप् केर लोप करी।
नहिं जग के रहलइ आब काज
"दीपक" वा "अजाद्यतष्टाषक" ॥
हम अध्यापक ॥

४

"कारक" बड़का भयकारक अछि,
"तद्धित" त हृदय विदारक अछि।
तकरा हम रटलहुँ भोंट फाड़ि-
पुनि काज पड़ै दोजक नापक ॥
हम अध्यापक ॥

मोंछ—१०

१

काटू हे पृथिव ! विकल हृदयक
आधार बनू, उद्धार करू ।
पददलित आइ अछि वीर पुरुष
कि छुओ तँऽ आब विचार करू ॥

२

हमहीं छी पुरुषक पौरुष आ
खत्ता मे चित्त खसल छी हम ।
नवयुगक सभ्य-लोकनिक पालाँ-
पड़ि,पङ्कक बीच फँसल छी हम ॥

३

पहिलुक युग मे शत्रुक आगाँ
नरपुङ्गव जे गरजैत छला ।
बस तनिकर कारण हमहीं छी
हमरे बल यश अरजैत छला ॥

४

एँठैत छला हमरा रहि रहि
वीरत्वक परिचय दैत छला ।
नहि नवका सनक फनैत छला,
हमरे बल मारि, मरैत छला ॥

५

हम तँऽ छी वैह, मुदा हमही,
दुर्गति द्वारेँ छी तड़पि रहल ।
नव युगक सभ्य लोकनिक नामें
छी कानि रहल, छी कलपि रहल ॥

६

बहुतो ऊपर सँ कपचि कर्माचि,
अधिकार हमर अछि छीनि रहल ।
बहुतो हमरे संहार करक हित,
"सेफ्टी रेजर" कीनि रहल ॥

७

बहुतो आधा धड़ काटि हमर,
अपने फैसन मे चूर बनल ।
हमरा विपत्ति बड़ भारी अछि,
हम मसोम्मात मे जाइ गनल ॥

८

ई दोष बूझू भगवानक थिक
अथवा चतुरानन छथि दोषी ।
ओ सृष्टिक बीच करइ छथि भ्रम,
नहिं सृष्टि आब अछि सन्तोषी ॥

९

हुनका सँऽ जा करवाउ शपथ,
नहिं जग मे हमर प्रचार करू।
फाटू हे पृथिव ! विकल हृदयक,
आधार बनू, उद्धार करू ॥

१०

हम सोड़ह वर्षक बाद अछि
अधिकार अपन जौं जमबइ छी।
तँ आजुक युग मे अपनहिंसँ
हम अपन प्रतिष्ठा गमबइ छी ॥

११

नहिं रहल प्रयोजन आब हमर
योजन भरि दूर रहइ अछि जग।
पहिने सँ बुझि आगमन हमर
"छी-छी दुर-दूर" कहइ अछि जग ॥

१२

लाजेँ ककरो लग नहिं बाजी
बाबाजी लग बैसी जाकै।
हम तुम्मा-चुट्टा-खँड़ुकी बल
निर्वाह करी जग नहिं ताकै ॥

१३

हमरा बिनु "सोहल सुथनी" सन
स्वीकार करै मुखड़ा राखब।
वसुधे! अपना दुःखक कारण
ककरा लग जा कै हम भाखब॥

१४

उठि जाओ हमर जगसँ सत्ता
वा सभ्यतैक संहार करू।
फाटू हे पृथिव! विकल हृदयक
आधार बनू, उद्धार करू॥

पनिभरक डाबा —११

१

अछि आत्म कथा मनहरण हमर ।
जीवनो बनल अछि मरण हमर ।
पण्डिते कोड़ि अनलनि हमरा
बस पानि मिला सनलनि हमरा ।
कुरवह दुर्दशा चाक पर दै
से कनिओं नहिं कहलनि हमरा ॥
सबहक समक्ष कहि सुनबइ छी
दुःखक जे अछि उपकरण हमर ।
अछि आत्म कथा मन हरण हमर ॥

२

हम डोंड़ा खेलक सार्द्र माँटि
लोढ़ी सँ हमरा पीटि पाटि
अत्यन्त सुकोमल बना, अपन-
शुभ-चक्रक ऊपर देल साटि ॥
ओ प्रबल दण्ड सँ घुमलहुं तैं-
खेदित अछि अन्तःकरण हमर ।
अछि आत्म कथा मनहरण हमर ॥

३

सहृदयगण सुनब सदय किछु भै
छल सुखद दिवस सुन्दर अतिशय ।
पण्डितक काज ई परपीड़न
जे घूमथि जगती मे निर्भय ॥
स्वार्थक बस सुख ओ मनोरथक
कैलन्हि अछि मिलि आहरण हमर ॥

४

दिन दिन दोगुन दुख बढ़ल गेल
कर्मक रेखा नहि पढ़ल गेल ।
मन मोहक तँ आकार हमर
बस ठोकि ठाकि कै गढ़ल गेल ॥
गोरहा करसीक विशाल गोल
छल बनल सुखद आवरण हमर ॥
अछि आत्म कथा मनहरण हमर ॥

५

बाँकी किछु और समीक्षा छल ।
बाँकी जीवनक परीक्षा छल ॥
ताहू पर अग्निक दया भेल ।

भेटल तावत नहिं दीत्ता ऋल ॥
ओ प्रखर ताप सँ दग्ध हृदय
के कै सकैछ संवरण हमर ? ॥
अछि आत्म कथा मनहरण हमर ॥

६

पुनि रक्तरूप भै गेल हमर ।
विख्यात रूप भै गेल हमर ॥
एकसर नहिं दस परिवार सहित
परहित मे चुप भै गेल हमर ॥
परहित साधन मे जौड़ आइ
बनलै अछि कण्ठाभरण हमर ।
अछि आत्म कथा मनहरण हमर ॥

७

नित लै जा कै बड़का इनार ।
दश बेर डुबाबै सार फार ॥
हम हाय ! अभागल कते पैघ
नहि उद्धारक कोनों प्रकार ॥
संसार शून्य, जीवन अन्हार,
इति अछि अतीत संस्मरण हमर ॥
अछि आत्म कथा मनहरण हमर ॥

८

एतवा धरि गौरव अछि हमरो।
एतवा धरि वैभव अछि हमरो॥
क्षण भङ्गुर जग, जीवन, दूनू
एतबा धरि अनुभव अछि हमरो॥
विश्वक महोच्चता, वा लघुता,
नहिं कै सकैछ अनुकरण हमर।
अछि आत्म कथा मनहरण हमर॥

९

अछि नाम हमर पनिभर डाबा।
हमरो अछि ई बड़का दाबा॥
नैयायिक गण पण्डित जे लै,
से घट थिकाह हमरे बाबा॥
हुनकर प्रलयें अछि प्रलय तथा
जागृतिएँ अछि जागरण हमर॥
अछि आत्म कथा मनहरण हमर॥

अरिकोंछक स्वाद–१२

बरखी छलन्हि ओहि दिन
... ... ?
हमरा बाबी केर
ककरा नोंत दिअउ
ताही लै उठलइ बहुतो काल घोंघाउजि
होइत घमर्थनि
ऊठि गेलैक पहर भरि बेर
बरखी छलन्हि ओहि दिन हमरा बाबी केर

× × ×

बाबा, गामक सब सँ बूढ़
बूढ़े टा नहिं
छथि प्रतिष्ठितो
बाजथि गप्प गूढ़ सँ गूढ़
एकरा घर मे
ओकरा घर मे

लगबै, बझबै, लै
नमराबथि रहि रहि सूँढ़
नीक लगइ छन्हि बैसल बैसल
रहौ लड़ैत गामकेर लोक,
जौं क्यौ दइ छन्हि हुनका टोक
तँऽ चुट्टा लगबइ छथि, बाबू !
चूसि लैत छथि सबटा सोनित
जहिना धनहा पोखरिक जोंक।
बिनु बाबा केँ नोतने,
अनका नोंति सकइ छथि के बुड़िलेल
तनिका सङे लगाय झमेल
भुस्सा थड़ि बइसैवा मे ओ
राखथि अप्पन पहिला हाथ
जे नोतथि पहिने बाबाकेँ
तनिका बाबा करथि सनाथ।

× × ×

पड़ल नोंत बाबा केँ
बाबा लेलन्हि फराठी दहिना हाथेँ
टपला सौंसे चऽर

टेकिते टेकिते।
हिसखे छन्हि सब दिन बाबाकेँ
नोंतक दिन मे दैत छथिन्ह ओ
नमहर बेस लड़ुब्बा ठोप
ठढ़का पर सँ,
तखन वैद्नाथी पासाकेर
उज्जर दप्‌दप्‌ बेस त्रिपुण्ड
नोंत खाय, भै जाथि भुसुण्ड !
एतबा धरि छन्हि
खेनिहारो छथि
ऐल पात पर वस्तु आइधरि
बाबा कहिओ कैल न व्यर्थ
भोज भात मे बहुतो ठाँ
सहजहिं बाबा करथि अनर्थ,
भरल जबानी मे
सठबैत छलाह पसेरी भरि धरि गूड़
पन्द्रह सोड़ह रोहुक मूड़
छागर सौंसे पर्नापिआइ मे
दही विलच्छन बस, दू छाँछ

सात सेर धरि तरले माँछ।

× × ×

छलनि गम्हरिश्रा पिड़ही राखल
माँजि मूँजि लोटा भरि पानि
धो कै पैर
बैसि पिड़ही पर
बाबा एकदम देलथिन तानि
छत्तिस टा तिल कोड़ा खैलनि
कूड़ कुड़ बऽड़ एगारह गोट
ऐल पात पर भात सठा कै
देलथिन पानि तखन दू घोंट
बड़ी सात डब्बुक टा खैलनि
छलइ अधिक मेरिचाइक योग
माँझ पेट भरिऐलनि तावत
बाँकी केवल रहलनि दोग
कड़ छलइ तेँ-
दूनू पूड़ा भरि भरि ऐलनि पानि
जावत बाबा नाक झाड़लनि
बामा हाथेँ पोछलनि मोंछ
तावत आबि गेलनि अरिकोंछ

नोर आँखि मे भरि भरि ऐलनि
कहै लगलथिन बात सम्हारि
आइ फेर ओ मोन पड़ल अछि
कते' दिनुक बिसरलहा बात
बाबी तोहर जीविते छलथुन
काजक रहै बतीसो दाँत
हुनका हाथक रान्हल बाटल
सन भेटल नहि तकराबाद
मुइलथुन जहिए तोहर बाबी
ऊठि गेल हमरा लेखेँ
अरिकोंछक स्वाद ।

———

कन्ट्रोल—१३

अछि कंट्रोल जगत गरमायल
लीडर सब लोभेँ भरमायल
कमल फुला गेल दुपहर राति
बेटा कुत्येँ बाप अजाति
देखितहिं सूर्य कमल सकुचायल
ठह ठह दुपहर भेंट फुलायल
खिचड़ि खा' खा' फूलल पेट
से न करइ अछि लोकक भेट
अपन वस्तु जे क्यौ दोबड़ौलक
वीच बाट पर जे गोबरौलक
से टोपक बहु धैने माथ
अपना केँ बुझि रहल सनाथ
कते' कठिनतेँ भेटल सोराज
घुरि आयल घर खिलटल ताज
रखबा लै तँ चाही लूरि
तकरे बिनु अछि सबटा दूरि

गुदगुदी

मूँह बाबि कै ऐल अकाल
खीचि रहल अछि पीठक खाल
एहि अकाल मे लोक न बाँचत
भुखले पेटँ नङटे नाचत
असल बात पर जौं दी ध्यान
तँ दोषी नहि बनते आन
सभक मूल उजरा अङरेज
तकरा सँ राखू परहेज
बनल अखाढ़ा अछि विकराल
सब क्यौ ठोकि रहल अछि टाल
तेहन उठल अछि आइ तरंग
जे जीतत से हैत चितंग
हँसत सैह जे खायत मारि
से बिगड़त जे लेत सम्हारि
टाङ उठा, आ टेकि कपार
गंगा बहती उनटे धार

मलपूआ—१४

पाठक जी रोटी खाइत छथि
दिन रहौ, रहौ वा राति
मुदा
पाठक जी रोटी खाइत छथि।
फगुआ दिन मलपूआ विधान
मिथिलाक प्रथा ई अछि पुरान
तेँ पाठक जी सोचै लगला
की करक थीक ?
परदेशक बासी की करता ?
परदेशक डर
कँचा कौड़ीक अभावक डर
की प्रथा पुरातन छोड़ि देथु ?
ताहू मे एक समाजक डर
जकरे दलान पर जैब
सैह हँसि देत
तथा उपहास करत

"हिनका नाड़ड़ि बहरैलनि हें"
ई थिका प्रगतिवादी कट्टर
हिनका पछुआड़क पीपर पर
छनि प्रगतिवाद केर भूत
डठौने घाड़
टोकि नहिं सकइ छिअनि
नहिं तँ ई करथिन सोर
आबि कै मूड़ी देत मचोड़ि
हिनक हम सब चर्चे दी छोड़ि"
अन्त मे बहरैलनि निष्कर्ष
आइ जड़िए मधूर केर खाइ
दुअन्नी सौं से कैलनि खर्च
बेचारे की करता ?
भिनसर सँ काजक छूटि रहइ छनि

कतहु न सुख
ने अपने घर
ने अनके घर
सबतरि अछि हाहाकार मचल
ई सृष्टि विधाता व्यर्थ रचल।

सुति उठि कै भोरे पाठक जी
फूलक जोगाड़ मे छथि लगैत
तोड़थि तुलसी बेल पात, दूबि
अवितहिं माजथि सराइ बाटी अपने हाथे
आ माँटि महादेवक पूजा लै
नित्य जाय बड़का मोहार सँ कोड़ि लबइ छथि
सानि तानि
चुटकी पर अँकड़ी बीछि
तखन शिव लिंग करथि निर्माण
राति दिन भगवानक सेवा मे लागल
जीवन छथि बितबैत
रहइ छथि यद्यपि ओ परदेश
रखइ छथि तैओ शालग्राम
और झोरी, घंटी रुद्राक्ष शंख सबटा संगहिं
अरबा तुलसीफुल केर चाउर पर
चिन्नी अथवा गूड़
जाहि दिन जे भेटैत छनि
से लगवइ छथि भोग
बड़का उजरा शंख बजा कै

भोला सँ बरदान मङइ छथि
'नित्य रही आरोग'
देखबा मे तैओ अबैत अछि
कण्ठक स्वर छनि पिपही सन
आ देह दशा तँ टिटही सन
से पाठक जी
फगुओ दिन मे
रोटी तँ खैबे करता
तेँ पहिने ओ गूड़क संग पानि पीलइ छथि ता'
दूनू टा पेटहि मे मिलि कै
बनि जैतनि जा मलपूआ
बिजया पीने पाठक जी
गरजइ छथि
'अच्छा हूआ'

चश्माक आत्मकथा—१५

आँखिक परम श्रृंगार छी हम
फैशनक सरकार छी हम
पूर्व मे बड़ बूढ़ व्यक्तिक
फेर मे निशिदिन पड़ल हम
ताग मे लेपटौल गुदरी
बीच मे रहलहुँ पड़ल हम
देखि कै ओझरैल अक्षर
संकलित पोथीक ऊपर
दृष्टि पड़ितहिं तन दुखी
कांपै लगइ छल नित्य थरथर
किन्तु फैसनहिक दया थिक
दुख उदधिहुक पार छी हम
आबतँ संसार मे आँखिक परम श्रृंगार छी हम
लड़खड़ाइत फ्रेम डंटी
एक केवल कान पर छल

एक पर लेपटौल तागक
छोर नीचा मुँहक लटकल
बीच धड़ छल खीचि राखल
तुंग नाकक नोंक ऊपर
डर सतत खसवाक छल
झूलैत माथक झोंक ऊपर
ई विधिक संयोग जे
बहुतोक नयनांधार छी हम
चारि आँखिक बीच मे सत्ते बनल शृंगार छी हम

के युवक फैशन जगत मे
रहत विनु हमरा मङौने
के चलत कखनहुँ हमर बिनु
आँखि पर पर्दा लगौने
के हमर सन लोक मे
कथमपि कहू उत्थान पौता
के हमर सन आधुनिक-
संसार मे सम्मान पौता
मत्त गज सन नाक पर चढ़ि
कान दुहु धेनिहार छी हम

पर पुनः जन-दृष्टि मे आँखिक परम शृंगार छी हम

चड़ुचन (चौठचन्द्र)—१६

एही बेरुक भादबक बात
चड़ुचन पावनि लगचिऐल छल
छुट्टी चारिदिनुक छल हमरा
गामक दिस धैने हम रस्ता
देखल बाधक बाध
पानि विना धहधह जरैत सब
मड़ुआ, काउनि मकैक
गाछ उठौने हाथ
बनल चातक आकाश तकैत
गहड़ि, गम्हड़ी पाण्डुरोग पीड़ित लोककसन
पीअर, लकलक
डोला रहल छल घेंट
छल सुखैल खत्ता मे
टुक टुक मुरझल बहुतो भेंट
बीआ बी० ए० जकाँ तकइ छल

सबहक मुँह विधुऐल
बारह सै चौहत्तरि सालक
जनमल छौंड़ा
चर्चा कैलक
सोड़ह सालक महा अकाल
सोड़हे सेर टका मे भेटइ
चाउर रमुनिआ,
मुसरी नेंड़ी फेंटल फाँटल।

× × ×

पहरे भरि दिन उठने
लोकक धीपि जाइत छल चानि
पुनर्वसू, असरेसो बीतल
मुदा भेलइ नइँ पानि
कतहु बाध मे छल अवाद नहिं
भरिओ ठुट्ठो धान
एहि बेर ई साल कोना कै खेपत दीन किसान
नहि जनैत छी कोन पाप सँ
छथि विपत्त भगवान।
परसू पावनि हेतइ,

साँझ खन उठलइ करिआ मेघ
पूब कोन सँ
मघा उतरि पुरवा चढ़लइ की
पुरिवा चललइ जोर
"जौं पुरवा पुरवैआ पावै
सुखले नदिया नाव चलावै"
जे कहने छथि घाघ
आइ सैह हम देखल
हुनकर उक्ति भेलन्हि चरितार्थ

पीरा बिजुली छिटकै लगलइ
गरजै लगलइ मेघ
हड़ हड़ गड़ गड़
थोड़बे कालक बाद
सुसुआ सुसुआ बरिसै लगलइ
उभिलै लगलइ पानि
सूपक सूपें।

रहल सात दिन बदरी लधने
पृथ्वीक कान कपार
झलकै लगलइ उज्जर दप दप्

आरि धूर बहि गेल पानि मे
सौंसे चऽरक चऽर
बूझि पड़इ चारू दिश केवल
चानी जेना पिटा देने हो
प्रकृति दया सँ द्रवीभूत भै,
अनमन तहिना झलकै लगलइ।
एलइ बाढ़ि कमला, बलान मे
कोशी से छोड़लनि फुफकार
गामक गामे पड़ा पड़ा सब
उजड़ै लागल लोक
कतहु आसरा किछु ने ककरो
केवल डेङी नाव।
माल जाल कें तकनहुँ हेरनहुँ
बीतो भरि हरिअरी
कतहु ने भेटइ चरबा लेल
धूकल केरा बहुतो घर मे
भीतक तर पड़ि गेल
सानल चिक्कस पड़ले रहलइ
के छनैत अछि आब पिड़ुकिआ

के देखैत अछि चौठी चान
नवका आँछी दही पौरि कै
पानिक द्वारें लोक हतास
सीके पर टाङल धैने अछि
बीच पानि मे लोक रहैत' छि
बान्हि बान्हि कै ऊँच मचान
के की करत ?
कोना कै बाँचत ?
खिचड़ि रान्है साँझ परात
आँखिक देखल दशा कहइ छी
एही बेरुक भादवक बात

प्राणक मोह—१७

माङै भीख अबइ छलि सब दिन
बुढ़िआ परम बूढ़ि
खोंचड़ि सन
हड्डी सहित सुखा
जारनि सन भेल छलैक
डेढ़ हाथक छलि
'बौआ लोकनि दिअऽ किछु दू ता'
भरल विषाद स्वरेँ
कहि बुढ़िआ
भभा जोर सँ हँसिओ दइ छलि।
एक दिनुक ई घटना देखल
हम अपना आँखिएँ एक ठाँ
अबितहिं बुढ़िआ केँ दुआरि पर
सपरल छौंड़ा पहुँचल लग मे
छल ओ छौंड़ा महा हँसक्कड़

पुछलकैक बुढ़िश्रा कें जा कै
की गै बुढ़िश्रा !
कोना रहइ छें
बहुतो दिन बितलउ
नहिं ऐलें कोन कारणें ?
आइ कहाँ सँ आबि रहल छें ?
निके रहइ छें किने शरीरें ?
जा बुढ़िश्रा उत्तर देबा लै
मुँह सरिश्रौलक
ताबत छौँड़ा फेर पुछलकइ
कते भेल छउ आइ तोरा मोटरी में चाउर
उसिने टा छउ
की छउ अरबो ?
गूड़ लबइ छी हम दू पाइक
दूनू गोटे भिजा कै फाँकब
की विचार से कह तों झट दै।
"हमर दाँत तूतल अथि बौआ !
हमरा किथुने होइऐ फाँकि"
विषम स्वरें बाजलि बुढ़िश्रा
पुनि कनिञे ताकि
फेर भभा देलकइ ताहि पर
चट दै छौड़ा पूछि वैसलइ
"बुढ़िश्रा ! आब भेलें बड़ बूढ़

तोँ मर,
हम सब करबउ मिलिकै बढ़िया जकाँ सराध
भोज भात बड़कीटा, करबउ
बड़ी, बड़, सकड़ौरी, पापड़,
नोति देबउ जयवार समूचा
तोरा नाम पर,
तोँ ही पहिने कहने जइहेँ
ककरा ककरा नोँत देबइ से, ”
पहिने बुढ़िया आँखि उठा कै,
गुड़रि, ओहि छौंड़ा दिस ताकि
बाजलि गुम्हड़ि जोर सँ
“तोँ ही दइथह अपन कमाइ ?
लिखल है त दहिया कपार मे
तहिया बैथलि रहब एतै हम ?
हिनके भारी लगइ थिअनि दे ....।”
मनहिं मनहिं हम सोचै लगलहुँ
ई थिक प्राणक मोह
रहौ दशा कतबो अधलाहे
तैओ लोक एहि जीवन सँ
नहिं ने होइछ हताश ।



कौलिकतेँ वैयाकरण, वृत्तिएँ शिक्षक, साधने पत्रकार ओ परिमार्जित शैलीक लेखक, 'अमरजी'क परिचय एक वाक्य मे यैह देल जा सकैछ।

श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'
च० मिथिला कालेज
दरभंगा